॥ श्रीः ॥

85

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

616

महाकविदण्डिप्रणीतं

विश्रुतचरितम्

(दशकुमारचरितोत्तरपीठिकान्तर्गतोऽष्टमोच्छ्वासः)

'आस्था' हिन्दीव्याख्या-शब्दार्थ-व्याकरण-
समास-अलंकार इत्यादि समन्वित

व्याख्याकार

डॉ० शशिशेखर चतुर्वेदी

एम० ए० (संस्कृत), पीएच्० डी०, साहित्याचार्य एवं पूर्व यू०जी०सी०,
कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अनुसन्धाता, संस्कृत विभाग, कलासङ्काय,
काशीहिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी

आशीर्वचन

प्रो० श्रीकिशोर मिश्र

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

महाकविदण्डिप्रणीतं

दशकुमारचरितम्

[उत्तरपीठिकान्तर्गतोऽष्टमोच्छ्वासः]

विश्रुतचरितम्

'आस्था' हिन्दीव्याख्यासहितम्

(१) अथ सोऽप्याचचक्षे—देव! मयाऽपि परिभ्रमता विन्ध्याटव्यां कोऽपि कुमारः क्षुधा तृषा च क्लिश्यन्नक्लेशार्हः क्वचित्कूपाभ्याशेऽष्टवर्षदेशीयो दृष्टः। स च त्रासगद्गदमगदत्—महाभाग, क्लिष्टस्य मे क्रियतामार्य, साहाय्यकम्। अस्य मे प्राणापहारिणीं पिपासां प्रतिकर्तुमुदकमुदञ्चन्निह कूपे कोऽपि निष्कलो ममैकशरणभूतः पतितः। तमलमस्मि नाहमुद्धर्तुम् इति।

शब्दार्थ—अथ=इसके बाद अर्थात् सप्तम उच्छ्वास में मन्त्रगुप्त के द्वारा बताये गये वृत्तान्त के बाद। **सः**=वह, विश्रुत नामक राजकुमार। **आचचक्षे**=बोला, कहा। **परिभ्रमता**=चारो ओर भ्रमण करते हुए, घूमते हुए। **क्षुधा**=भूख से। **तृषा**=प्यास से। **क्लिश्यन्**=दुःखी होता हुआ, कष्ट का अनुभव करता हुआ। **अक्लेशार्हः**=दुःख सहन न करने योग्य अर्थात् सुकुमार। **कूपाभ्याशे**=कूँए के समीप। **अष्टवर्षदेशीयः**=आठ वर्ष की उम्र वाला। **त्रासगद्गदम्**=डर से रूँधे हुए कण्ठ के स्वर से। **अगदत्**=बोला, कहा। **क्लिष्टस्य**=कष्ट में पड़े हुए (मुझको)। **आर्य**=हे श्रेष्ठ, पूजनीय। **साहाय्यकम्**=सहायता, **प्राणापहारिणीम्**=प्राणों को हरने वाली। **पिपासाम्**=प्यास को। **प्रतिकर्त्तुम्**=दूर करने के लिए। **उदञ्चन्**=निकालते हुए। **इह**